ISSN-0971-2156 IMPACT FACTOR (2020) 5.24

SPECIAL ISSUE ON
INTERNATIONAL E-CONFERENCE.
JANUARY-2021

RESEARCH CARE ASSOCIATION

International E-Conference on Social Science, Science & Technology, Management and Humanities (ICSSMH) 2021

Editors
Dr. A. Nageshwarrao
Mr.Shubham Ambhore

Dr. N.P. Kale

ISBN-0971-2156
Vol-12 Issue-03
Impact Factor(2020)- 5.24

INDEX

Sr. No.	Title of the Papers	Name of Authors	Page No.
01	Analysis of National Food Security Act	Prof.Arun M.Rakh	01
02	The effect of mobile retailing on consumers' purchasing experiences: A dynamic perspective	Dr.A.M. Chandre Mr. A.N. Dhiver	04
03	Geographical Study of Farmer Suicide in Maharashtra: Special Reference to Marathwada	Dr.A.I.Khan	09
04	Art and Science of Voice Culture	Dr.Surekha Murlidharrao Joshi	14
05	Kitchen gardens:-Their Social, Economic and Environmental Contributions to Community	Dr. Jogdand S. K.	18
06	Causes and Impact of Labour Migration: A Case Study of Marathwada Region	Dr.Sidharth S. Jadhav Mr.Sandeep G. Vale	20
07	Indian Modern Agricultural Systems	Dr.Baban M Mohite Kendre Rameshwar Dhondiba	24
08	A Study of Human Resources Management Practices and its Impact on Employees job Satisfaction in Private Sector Banks: A Case Study of Yes Bank	Muntaser A. Almaamari	26
09	Human Rights and Issue of Global Health	Dr. R. K. Kale	32
10	Mobile Marketing in the Retailing Environment	Dr.A.M. Chandre Mr. A.N. Dhiver	35
11	Emerging Issues in E-Commerce in India	Dr. Anurath M. Chandre	39
12	Cyanobacterial Diversity of Dokewada Reservoir in Beed District of Maharashtra	M. L. Thumram S. M. Talekar	43
13	Kiran Desai's Hullabaloo in the Guava orchard:The Study of Multicultural Identity	Dr. Sudhir P. Mathpati Subhash Vitthalrao Pandit	45
14	संविधानिक राष्ट्रवादाचा प्रशासनावरिल प्रभाव	प्रा. डॉ. जाधव विठ्ठल सखाराम	52
15	भारतीय संस्कृति के सोपानो का अध्ययन	प्रा.डॉ. विलास तुकाराम राठोड	56
16	महिला सबलिकरण वास्तव आणि व्यथा	डॉ.अशोक डोळस	59
17	दहशतवाद, नक्षलवाद, राजकीय हिंसा	बर्डे भागवत रामप्रसाद	61
18	स्त्री स्वातंत्र्याच्या भारतीय संकल्पना आणि कला	प्रा. डॉ. बालासाहेब कोंडिबा जाधव कैलास मच्छिंद्रनाथ होके	63
19	आदिवासी स्त्री : शिक्षण, आरोग्य आणि आर्थिक स्थिती	डॉ.बनायत जी .एच. अभिनिता लक्ष्मण बनकर	65
20	बौद्ध धम्मामध्ये दान पारमिता	प्रा. डॉ. मनोहर सिरसाट पाडमुख भाग्यशाली रामदास	67
21	आदिवासी आत्मकथन व चरित्र वाङ्मयातील धर्मांतरविषयी कार्य	डॉ. विठ्ठल केदारी	69

ISBN-0971-2156
Vol-12 Issue-03
Impact Factor(2020)- 5.24

22	औद्योगिक क्षेत्रात काम करणाऱ्या कामगार स्त्रियांच्या समस्या	प्रा.डॉ.एस.एस.मानकर प्रिती किशोर ढेपे	73
23	बुद्ध तत्त्वज्ञानातील नैतिक शिक्षण आणि पंचशीलाचे महत्त्व	डॉ. बाळासाहेब बा. लिहिणार. वनामाला देविदास श्रीसुंदर	75
24	पर्यायी करप्रणाली असणारा केंद्रीय अर्थसंकल्प	प्रा.डॉ.भगवान सांगळे	77
25	अभिव्यक्ती स्वातंत्र्य आणि साहित्य	डॉ. विनोद उपर्वट	81
26	हाडकी हाडवळा' या दलित कादंबरीतून अभिव्यक्त झालेला स्त्री जीवन संघष	प्रा. डॉ. मनोहर सिरसाट सुजाता जगन्नाथ बागुल	83
27	मंटो जिंदा है !(मंटो की कहानियों में सामाजिक चित्रण)	डॉ.काळे नवनाथ पुंजाराम	89
28	महिपतीबाबा ताहराबादकर यांनी केलेले संत तुकारामांविषयीचे लेखन	प्रा. बालासाहेब विष्णू कटारे	91
29	कवीश्वराचार्य - भाष्करभट्ट बोरीकर	प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील	94
30	निरोगी जीवनशैली	प्रा. विजय यशवंत देशमुख	96
31	आंबेडकरी चळवळीचा महाकवी-वामनदादा	प्रा.डॉ. मनोहर सिरसाट	99
32	काळा पैसा आणि त्याचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर परिणाम	प्रा. मनोज सरोदे	102

ISBN-0971-2156
Vol-12 Issue-03
Impact Factor(2020)- 5.24

मंटो जिंदा है !
(मंटो की कहानियों में सामाजिक चित्रण)

डॉ.काळे नवनाथ पुंजाराम,
सहा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
सौ.के.एस.के.महाविद्यालय, बीड -४३११२२
मो.नं.९५७७७७५५५५

उर्दू कहानी जगत में सआदत हसन मंटो का नाम काफी मशहूर रहा है। १९३५ में उनका पहला कहानी संग्रह `आतिशपारे` प्रकाशित हुआ। मंटो की संपूर्ण रचनाएँ `दस्तावेज` शिर्षक से पाँच खंडों में प्रकाशित हुई है। `मंटो` का नाम उनकी कहानियों का विषय, यथार्थता, भाषा प्रयोग के लिए काफी चर्चित रहा है। वे उनके निजी जीवन में भी काफी चर्चित रहे। मंटो पर आलोचकों का विशेष स्नेह दिखाई देता है। मंटो को कई बार अदालत के चक्कर काँटने पड़े क्योंकि उनकी कहानियों पर मुकदमें दर्ज किये गये। मंटो अदालत में भी लड़ता रहा एवं बाहर समाज व्यवस्था से भी लड़ता दिखाई देता है। साहित्य जगत में वह अपने आलोचकों द्वार बदनाम हुआ। चाहें जो भी हो, चाहे वह मशहूर हो या बदनाम फिर भी `सआदत हसन मंटो` का व्यक्तित्व एवं कृतित्व साहित्य जगत को हमेशा के लिए प्रभावित करता रहेगा इसमें कोई संदेह नहीं।

मंटो की कहानियाँ एवं आलोचना को देखने के बाद वाकई हम कह सकते हैं कि सआदत मर गया लेकिन मंटो जिंदा है! मंटो की कहानियों के विषय एवं भाषाशैली को लेकर कई सवाल उठाकर उसे कटघरे में खड़ा किया गया है। लेकिन उसे अपराधी करार देने से क्या होगा ? उसका जूर्म क्या है ? समाज का यथार्थ रूप से चित्रण करना अगर जुर्म है तो फिर ठीक है!

मंटो पर जब-जब इल्जाम लगाये गये तब-तब वह परेशानी से जूझ ाता रहा। लेकिन उसका अपना बयान वाकई सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का राग आलापने वाले समाज को आईना दिखाने का काम करता है। वे लिखते हैं, ``अगर आपको मेरी कहानियाँ अश्लील या गंदी लगती हैं, तो जिस समाज में आप रह रहे हैं, वह अश्लील और गंदा है। मेरी कहानियाँ तो केवल सच दर्शाती है...``१ वाकई सच्चाई की रोशनी काफी तेज होती है इसी कारण उसकी प्रखरता से आँखे और अन्य कुछ देख नहीं पाती हो ! मंटो की पाँच कहानियों पर मुकदमा चलाया गया है। `काली शलवार` यह कहानी `अदब-ए-लतीफ` के वार्षिक अंक १९४२ में प्रकाशित हुई थी। इस पर मुकदमा दर्ज किया गया था।

नैतिकता, सभ्यता का सहारा लेकर मंटो को जानबुझकर परेशान करने का कार्य किया गया। मंटो अपनी सफाई देता रहा। मंटो की कहानियों को साहित्य मानने से इन्कार किया गया लेकिन सियासी हथकंडो को मंटो विरोध करता रहा। भारत हो या पाकिस्तान दोनों मुल्कों में मंटो की कहानियों पर सवाल उठाये गये और मुकदमें की चलाये गये। लेकिन मंटो बेखौफ होकर लिखता रहा। विनोद भट्ट लिखते हैं, ``वो कतई आस्तिक या धार्मिक वृत्तिवाला न था। उसने एक ही धर्म स्वीकार किया था, प्रामाणिक लेखन। जिस क्षण जो सच लगे, वह लिखता। यही उसकी प्रतिबद्धता, धार्मिकता, आप जो माने वो।``२ इससे यह स्पष्ट होता है कि मंटो ने बेहिचक, निडरता के साथ अपना साहित्यिक दायित्व निभाया है। जब वे भारत छोड़कर पाकिस्तान जा बसे तो उनकी कहानियाँ देश विभाजन की त्रासदी को दर्शाती है। देश विभाजन का चित्र, सामान्यों के हाल एवं मौकापरस्ती को लेखक करीब से देख चूके थे इसलिए `खोल दो` जैसी कहानी बँटवारे को लेकर हो रहे दंगे, हिंसा को दर्शाती है। साथ ही सराजुदीन की १७ साल की बेटी सकीना इस दंगे में गायब होती है एक पिता की पीड़ा उसकी व्याकुलता, बेटी के प्रति प्यार, चिंता को दर्शाती है। एक ओर पत्नी की मौत दंगो में हो चूकी है तो दूसरी ओर बेटी गायब यह त्रासदी मंटो ने कहानी के माध्यम से उजागर की है। मनुष्य के विविध रूप उसकी लुप्त होती संवेदनशीलता को मंटो समाज के सामने रखते हैं। उसकी बेटी सकीना मिल जाती है। उसकी बेटी सकीना मिल जाती है लेकिन वह हवस का शिकार होती है। एक पिता का तड़पता हृदय एवं सामाजिक स्थिति का चित्रण मंटो ने किया है।

देश विभाजन की त्रासदी को सशक्त रूप से मंटो ने उजागर किया है। मनुष्य के रूप में हर जगह पशू भी दिखाई देते हैं। यही मनुष्य का पशूवत रूप देखकर संवेदनशील व्यक्ति तड़प उठता है। उपेंद्रनाथ अश्क लिखते हैं, ``मंटो मानवता का पूजारी है, इसलिए जब वह मनुष्यों को पशुओं जैसा काम करते देखता है तो तिलमिला उठता है।``३

`नंगी आवाज़े` इस कहानी को भी अश्लीलता के दायरे में रखा गया है। भोलू नामक युवा शादी के बाद जब अपनी पत्नी के साथ सोने जाता तो वह सो नहीं पाता। सामान्य कसबे के लोगों के रहने की समस्या महानगरों में दिखाई देती है। जहाँ जगह मिले वहाँ पर यह लोग अपनी गृहस्थी बना लेते हैं। साथ ही पारिवारिक जिम्मेदारियाँ एवं

ISBN-0971-2156
Vol-12 Issue-03
Impact Factor(2020)- 5.24

शारीरिक जरूरतों को पूरा करना अहम् बात है। इसमें मुकदमा दायर करनेवालों को अश्लीलता दिखाई दी लेकिन वाकई जिस समस्या को मंटो ने उठाया हे उसे वे समझ नहीं सके। महानगरीय जीवन की त्रासदी पूर्ण स्थिति में कम जगह में भेड बकरीयों की तरह जीवनयापन करनेवाले सामान्य लोगों का प्रतिनिधीत्व करनेवाला भोलू अपनी बीवी के साथ संबंध बनाने में असफल होता है। वह अपनी बीवी को मायके भेज देता है। कहानी के अंत में वह पागल हो जाता है। महानगरीय सभ्यता में सामान्यों के जीवन का चित्रण मंटो ने किया है।

'टोबा टेकसिंह' नामक कहानी में देश का बँटवारा का चित्रण किया है। पागल कैदीयों को अपने-अपने देश में छोड़ने का फैसला लिया जाता है। बिशनसिंह नामक कैदी गाँव टोबा टेकसिंह का है। सब उसे टोबा टेकसिंह के नाम से जानते हैं। उसके परिवार वाले हिंदुस्तान आ गये लेकिन बिशनसिंह द्विधा में हैं टोबा टेकसिंह कहाँ पर है - पाकिस्तान में या हिंदुस्तान में ? वह बीच में ही दम तोड़ देता है। सरहद के इस पार हिंदुस्तान उस पार पाकिस्तान बीच की जगह पर टोबा टेकसिंह। यह कहानी अपने गाँव, परिवार एवं मीट्टी से जुड़ा हुआ अपनापन, प्यार को उजागर करती है। आम आदमी के लिए देखा जाये तो क्या पाकिस्तान और क्या हिंदुस्तान ? सब सियासी खेल है। 'ठंडा गोश्त' मंटो की चर्चित एवं अश्लीलता का आरोप रही कहानी है। ईशरसिंह अब कुलवंत के साथ वह मौज-मस्ती नहीं कर पाता। वह कुलवंत के साथ सो नहीं पाता क्योंकि उसने डकैती के बाद एक युवती को उठाकर लाया था एवं उसके साथ संभोग किया था लेकिन जब उसे वह देखता है तो वह लड़की मर चूकी होती है। यह कहानी एक मर्द की करतुत को नियती द्वारा दिये गये शाप को उजागर करती है। लाख प्रयासों के बावजुद भी ईशरसिंह हरकत पैदा नहीं कर सकता।

मंटो की कहानियों पर अश्लीलता का आरोप लगाने वालों ने इन परिवेश, शब्दों को उस निगाह से देखने के बजाए कहानी द्वारा लेखक को क्या कहना है इसे गंभीरतापूर्वक देखना जरूरी लगता है।

मंटो की कहानियों में सबके अंत में पाठक को एक बिजली के तार को छुनेपर जो झटका लगता है वैसा झटका जरुर लगता है। सारी सोच थम सी जाती है। अश्लीलता के इल्जामों को मंटो ने नकारा है, ``हम जिन्सियात पर नहीं लिखते। जो समझते हैं हम ऐसा करते हैं, यह उनकी गलती है। हम अपने अफसानो में खास औरतों और खास मर्दों के हालत पर रोशनी डालते हैं।``४

निष्कर्ष

सआदत हसन मंटो जब जीवित थे तब भी काफी चर्चा में रहे एवं जब इस दूनिया से चल बसे तब भी चर्चा में घीरे रहे। मंटो ने विभिन्न विषयों पर अपनी कहानियाँ लिखी है। उन्होंने सिनेमा के लिए पटकथा लिखने का भी प्रयास किया लेकिन वहाँ उन्हें सफलता नहीं मिल सकी।

उनकी निजी जिंदगी की परेशानियाँ, घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ, मस्त मौला जैसा व्यक्तित्व एवं शराब की आदत को देखकर वे मुझे गालिब के बीरादरी के लगने लगते हैं। हाथ से सब कुछ छूट रहा है लेकिन फिर भी अपना वजूद बनाने का प्रयास एवं दुनियाँ की त्रासदी, पीड़ा को झेलकर जिस समाज में रह रहे हैं उसका चित्रण वे पूरी ईमानदारी के साथ करते दिखाई देते हैं। भारत एवं पाकिस्तान में भी मंटो के व्यक्तित्व, कृतित्व पर सिनेमा को निर्माण किया गया है। दौर बदलता रहता है। जिस समाज में उसे बदनाम किया गया वहीं समाज आज एक लेखक के रूप में मंटो का लोहा मानने लगा है।

मंटो की कहानियाँ समाज के नग्न यथार्थ को उजागर करती है। उसे स्वीकार करने के लिए पाठक के पास व्यापक दृष्टि का होना आवश्यक है। भारत-पाकिस्तान के बँटवारे से वे नाराज़ थे। आख़िरकार बँटवारे की त्रासदी एवं मनुष्य के विविध रूपों को भी वे पूरी सजगता के साथ व्यक्त करते हैं। बार-बार उनकी कहानियों पर अश्लीलता का आरोप लगाया जाता है। वे जब जीवित थे तब मुकदमे दर्ज कर उन्हें अदालतों में कटघरें में खड़ा किया गया। आज मंटो नहीं है फिर भी कुई आलोचक या फिर पाठक सभ्यता, संस्कृति के नाम पर नाक-मूँह खिंचते हुए मंटो की कहानियों को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास करते हैं।

लेकिन मंटो की कहानियों का आशय समझने के लिए पहले हमें मंटो के प्रति जो हमारी सोच बनायी गयी है उसे बदलना पड़ेगा।

रही बात अश्लीलता एवं लेखक कर्म की तो उसे मंटो के शब्दों में ही समझना जरूरी है - ``मैं सोसायटी की चोली क्या उतारूंगा, जो है ही नंगा। मैं उसे कपड़े पहनाने की कोशिश नहीं करता क्योंकि यह मेरा काम नहीं, दर्जियों का काम है।`` यकिनन साहित्य जगत में मंटो जिंदा रहेगा।

संदर्भ

१. स्याह हाशिये और अन्य कहानियाँ - मंटो- मलपृष्ठ
२. मंटो एक बदनाम लेखक - विनोद भट्ट, पृ.१५
३. अजब आज़ाद मर्द था मंटो : उद्भावना - जानकीप्रसाद शर्मा, पृ.३९
४. वहीं पृ.५३

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

January - 2020
Vol. I No. 13

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

Dr. N. P. Kale

डॉ.सुनिता भीमराव राठोड 38

वैश्विकरण और अनुवाद
प्रा.डॉ. सैराज अन्वर तडवी 42

जनसंचार माध्यम और अनुवाद
प्रा. उमेश बेलंके 45

वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में अनुवाद की समस्याएं
डॉ. इसपाक अली. 48

मराठी भाषा से अनूदित दलित आत्मकथा : उचक्का
डॉ. वरशिळ रामेश्वर 51

हिंदी नवजागरण और अनुवाद
डॉ. योगेष विठ्ठल दाणे 54

काव्यानुवाद
प्रा.डॉ. सांगोळे शिवाजी 57

'रोजगार निर्माण में अनुवाद का योगदान'
डॉ.शेख शहेनाज अहेमद 61

अनुदित साहित्य - 'आत्मकथा के संबंध में'
प्रा.डॉ. कुसुम राणा 64

हिंदीभाषा एवं साहित्य में अनुवाद का महत्व
डॉ.सानप शाम बबनराव 67

आर.यू. आर नाटक में विज्ञानवाद
प्रा. डॉ. चांदणी लक्ष्मण पंचांगे 70

अनुवाद और संचार माध्यम
प्रा.डॉ. जयश्री वाडेकर 73

नारी शोषण की बेबाक अभिव्यक्ति जीवन हमारा
(जिणं आमुचं आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)
डॉ. राजश्री दगडू भामरे 77

अनुवाद का स्वरूप एवं मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य
प्रा.संतोष संभाजीराव जगताप 81

अनुवाद का स्वरूप एवं परंपरा
प्रा. डॉ. जाधव के. के. 85

हिंदी भाषा और अनुवाद
शारदा आशन्ना बाचलकर 88

दलित उत्पीडन की दास्तान बयान करता : 'जीवन हमारा'
प्रा.डॉ. शेख मुखत्यार 90

अनुवाद औ भारतीय भाषाओं का अंतः संबंध
प्रा. डॉ. उत्तम जाधव 93

हिंदी भाषा और अनुवाद
प्रा.डॉ. जाधव अर्जुन रतन 96

हिंदी भाषा और अनुवाद
डॉ. अलका एन. गडकरी 101

अनुवाद - एक सामाजिक परिवर्तन
वर्षा प्रल्हाद गायगोले 104

हिंदी भाषा और अनुवाद
प्रा. डॉ. गिरी डी. वी. 107

'मुक्त ग्रह देख रहा है' अनुदित विज्ञान कथा
डॉ.मीना खरात 110

हिंदी भाषा और अनुवाद
डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर 112

हिंदी में अनुवाद: राष्ट्र की शान
डॉ. संतोष पवार 114

दलित आत्मकथात्मक उपन्यास, 'छोरी कोल्हाटी' का एवं 'जीवन हमारा' में व्यक्त दलित विमर्श
प्रा.डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद 118

हिंदी अनुवाद राष्ट्रीयता की पहचान
डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड 122

अनुदित साहित्य का महत्व एवं आवश्यकता
प्रा.डॉ.न.पुं.काळे 126

अनुदित साहित्य का महत्व एवं आवश्यकता

प्रा.डॉ.न.पु.काळे

आज साहित्य की विविध विधाओं का कई भाषाओं में अनुवाद होता हुआ दिखाई देता है। साहित्य तथा समाज कि दृष्टि से वह बात महत्वपूर्ण है। साहित्य समाज के लिए होता है इसलिए वह समाज के पास पँहुच पाना उतना ही महत्वपूर्ण है। समाज हित की कामना लेकर या समाज को विधायक दिशा देने कि दृष्टि से रचनाकार विभिन्न कृतियों की रचना करता है। समाज से जूड़ा रचनाकार अपनी विधाओं में सामाजिक गतिविधियों को स्थान देता हुआ दिखाई देता है। यह बात भी महत्वपूर्ण समझी जाती है कि, रचनाकार जिस सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, उद्योग-व्यापार राजनीति, प्रशासन आदि से जूड़ा हुआ है, तो उसकी रचनाओं में उस वर्ग विषय को देखा जाता है।

रचनाकार भले ही समाज की वास्तविकता को प्रखर रूप से उजागर करता हो या फिर मनोरंजन को लेकर लिखता हो आखिरकार वह लिखता तो 'मनुष्य' के लिए ही है। इससे स्पष्ट होता है कि, साहित्य मनुष्य के लिए ही है। तो वह मनुष्य, समाज तक पहुँचना अहम् है। अनुवाद वह माध्यम है जिसके जरिए एक भाषा कि कृति अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषा के पाठकों तक पहुँचती है, परिणाम स्वरूप एक रचनाकार के लिए महत्वपूर्ण है।

उतनी ही यह बात भाषा के विकास के लिए भी फायदेमंद साबित होती है। क्योंकि किसी कृति के अनुवाद से केवल वह कृति किसी अन्य भाषा में पहुँचती नहीं है, बल्कि साथ-साथ उस कृति के माध्यम से उस भाषा के लोगों के विचार, समाज की विभिन्न मान्यता, परंपरा, सभ्यता, संस्कृति, सूख-दुःख, विभिन्न धारणाएं, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि स्थिति का बोध होने में भी सहायता होती है। इस कारण किसी रचना का जब अन्य भाषा में अनुवाद होता है तो यह सारा परिवेश समझने में, वहां के मनुष्य का दूख-दर्द समझने में निश्चित रूप से सहायता होती है।

आज की तारिख में विभिन्न भाषाओं में रचनाओं का अनुवाद बड़ी मात्रा में होता दिखाई देता है। यह बात साहित्य एवं भाषा के लिए महत्वपूर्ण है। सामान्यतः अनुवाद का अर्थ यह है कि, किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दुसरी भाषा में परिवर्तन करना अनुवाद कहलाता है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है वह मूलभाषा, स्त्रोत भाषा के रूप में पहचानी जाती है तो जिस नई भाषा में अनुवाद किया जाता है उस भाषा को लक्ष्यभाषा के रूप में पहचाना जाता है।

आज भारत की साहित्यिक कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है। हर एक राज्य, प्रान्त कि अपनी अलग भाषा, बोलियाँ है। तो समूचे राष्ट्र के ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश मान्यता विचारों को समझने के लिए यह अनुदित साहित्यिक रचनाओं की काफी सहायता होती है।

साहित्य के क्षेत्र में रविंद्रनाथ टैगोरजी का नाम बहुचर्चित है। उनकी 'गितांजली' काव्य कृति को नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह बात राष्ट्र के लिए एवं साहित्य, रचनाकारों के

लिए गौरवपूर्ण है। बांग्ला में लिखी गई इस 'गितांजली' काव्यकृतियों का भारत की कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यदि इस बांग्ला मूल भाषा से अन्य लक्ष्य भाषा में अनुवाद नहीं होता तो इस काव्य का रसास्वाद अन्य पाठकों को नहीं हो पाता।

मराठी भाषा में 'सामाजिक विषमता को लेकर समाजव्यवस्था पर प्रहार करनेवाला नाटक 'घाशीराम कोतवाल' बहुचर्चित रहा है। उसके रचनाकार रहे है, विजय तेंडुलकर। इस कृति को हिंदी भाषा में अनुवादित किया है। 'वसंत देव' इन्होंने यह नाटक हिंदी भाषा में पहुँचाकर महाराष्ट्र, मराठी भाषी लोगों का जीवन एवं सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था का चित्र पूरे राष्ट्र के सामने आ सका। इस नाटक का मराठी हिंदी भाषा में मंचन भी हुआ है।

'गिरीश कर्नाड' भारत के मशहुर लेखक के रूप में परिचित हैं। कन्नड और अंग्रेजी भाषा में इन्होने अपना लेखन कार्य किया है। इनकी बहुचर्चित कृतियाँ रही है, तुगलक, हयवदन, नागमंडल आदि। इन सभी कृतियों का भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद तथा नाटयकृतियों का मंचन भी किया है। कर्नाड जी को पद्मश्री, पद्मविभुषण, ज्ञानपीठ जौसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है।

हिंदी के ज्ञानेमाने रचनाकार प्रेमचंदजी ने आरंभिक दौर में उर्दू में लेखनकार्य किया तदूपरांत हिंदी भाषा में उन्होंने कहानी तथा कई उपन्यासों का लेखन कार्य किया है, इनके द्वारा लिखित कई कृतियों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

मराठी भाषी लेखकों में शिवाजी सावंत इनका नाम काफी चर्चित रहा है। मराठी में लिखा गया 'मृत्युंजय' यह उपन्यास महत्वपूर्ण समझा जाता है। इस कृति को ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी नवाज़ा गया है। साथ ही इस उपन्यास को गुजराती, हिंदी तथा अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है।

हाल ही में स्त्रीवादी लेखिकाओं में बांग्लादेश की तस्लीमा नसरिन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों भी विद्रोही रूप में दिखाई देता है। बांग्ला भाषा में लिखी गई उनकी कई कृतियों का हिंदी, मराठी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप, बांग्लादेश वासियों की नारी के प्रति रहा दृष्टिकोण, विचारों का परिचय मिलता है। व्यवस्था को आईना दिखाने का काम यह विद्रोही लेखिका तस्लीमा नसरिन करती है तो पुरस्कार के रूप में वहाँ की व्यवस्था उसे अपने ही देश से बाहर निकालती है। भारत में पनाह लेकर तस्लीमा नसरिन जीवन यापन कर रही है। उनके द्वारा लिखी गई साहित्यिक कृतियाँ यथार्थता को उजागर करती है।

अंग्रेजी भाषा के रचनाकार टी.एस.इलियट, विलियम शेक्सपियर, टी.एच.लारेंस, जॉन कीट्स, वार्सन शियर आदि की कई काव्य कृतियाँ, अन्य विधा का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। 'सआदत हसन मंटो' का नाम भी कहानी क्षेत्र में चर्चित रहा है। उनकी कई कहानियों का हिंदी, मराठी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

मलाला युसुफझाई का नाम भी काफी चर्चित रहा है। २०१४ में इसे नोबल पुरस्कार (शांती) से नवाजा गया है। स्त्री शिक्षा को लेकर मलाला का कार्य महत्वपूर्ण रहा है। पाकिस्तान में कई जगहों पर लड़कियों को शिक्षा का अधिकार नहीं है। इसके विरोध में उतरकर मलाला ने जंग छेड़ी। मलाला के इस कार्य को तालीबानी आतंकवादियों ने विरोध किया एवं उस पर जानलेवा हमला भी किया

गया। 'ई'स्-ईर्ते' इस अंग्रेजी भाषा में लिखा गया उपन्यास हिंदी, मराठी एवं अन्य भाषाओं में अनुवादित किया गया है। देश, विदेश के कई रचनाकार, राजनीतिज्ञ, महात्माओं, महापुरुषों की कृतियाँ एवं जीवनियों को मूलभाषा से अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया है। चेतन भगत, शोभा डे जौसे रचनाकारों की कृतियाँ भी कई भाषाओं में अनुदित हो रही है। महत्वपूर्ण बात तो यह भी है कि पाठक इन अनुदित कृतियों का स्वागत कर रहे हैं। अधिकाधिक रूप से इन कृतियों का अध्ययन हो रहा है। पाठक उसे पढ़ रहे हैं।

निष्कर्षतः निश्चित रूप से साहित्यक्षेत्र में अनुदित साहित्य का महत्व दिखाई देता है एवं उसकी आवश्यकता भी प्रतीत होती है। साहित्यिक कृतियों का विभिन्न भाषाओं में आदान-प्रदान हो रहा है। अनुवाद कार्य को अपनाया जा रहा है। वहीं स्थिति हमें सिनेमा जगत में भी दिखाई देती है। विदेशी भाषाओं की कई फिल्मों को हिंदी भाषा में डब किया जा रहा है। किसी एक मूलभाषा में लिखी गई पटकथा को अन्यभाषा में लिखा जा रहा है। फिल्मों का निर्माण भी जोरो-शोरों पर दिखाई देता है।

साथ ही भारत में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में फिल्मों की निर्मिती होती है। पटकथा को लिखा जाता है। वहीं प्रादेशिक भाषा की फिल्म अब अपना प्रादेशिक क्षेत्र के बंधन को तोड़कर हिंदी या अन्य किसी भाषा में पहुँच रही है। यह बात समाज, मनुष्य, परिवेश, सभ्यता, संस्कृति, मानवता, इतिहास के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण साबित होती दिखाई दे रही है।

प्रा.डॉ.न.पु.काळे
सौ.के.एस.के.महाविद्यालय, बीड